प्राक्कथन

हिंदी साहित्य में कहानी लोकप्रिय एवं महत्त्वपूर्ण साहित्य विधा है । उसमें लोक-कल्याण की भावना और लोकरंजन का समन्वय है । वह छोटे मुँह बड़ी बात कहनेवाली साहित्य विधा है । आधुनिक युग की देन समझी जानेवाली इस विधा में सर्वाधिक लेखन हुआ और आज भी हो रहा है । पुरुष लेखकों के साथ महिला लेखिकाओं की भी अधिक रूचि कहानी साहित्य में दिखाई देती है । साठोत्तरी महिला लेखिकाओं की यह विशेषता रही है कि उन्होंने स्वयं नारी होने के कारण नारी को केंद्र में रखकर कहानी साहित्य का लेखन किया है और आज भी कर रही है, जिससे नारी द्वारा नारी लेखन का एक दौर ही आ गया है । नारी विमर्श के इस दौर में लेखिका मृदुला गर्ग एक विशेष स्थान रखती हैं । मृदुला गर्ग ने साहित्य की हर विधा में अपनी लेखनी चलाई है । वह एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखिका हैं । अब तक इनके सात कहानीसंग्रह प्रकाशित हुए हैं और इसी साल इनके और तीन कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । जिसमें प्रधान रूप से नारी विमर्श को प्रस्तुत किया है । समकालीन महानगरीय नारी की स्थिति का यथार्थ चित्रण इन्होंने किया है ।

- **प्रेरणा एवं विषय चयन -**

हिंदी भाषा तथा साहित्य दोनों के प्रति मुझे विशेष रूचि है । हिंदी साहित्य की गद्य विधाओं में कहानी विधा ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है, जिससे मुझे कहानी पढ़ने में विशेष रूचि है । स्वाभाविक है कि एक नारी होने के कारण नारी जीवन से जुड़ी कहानियाँ मुझे अधिक पसंद हैं । अत: मैंने एम्.फिल. उपाधि हेतु अनुसंधान के लिए कहानी विधा का चयन किया । मेरी रूचि को परखते हुए मुझे एक उपलब्धि के रूप में प्राप्त शोध-निर्देशक आदरणीय गुरुवर्य डॉ. शंकर वसंत मुदगल जी ने मुझे समकालीन महिला साहित्यकारों की विशेष जानकारी दी । मैंने अनेक समकालीन महिला कहानीकारों के कहानीसंग्रह पढ़े लेकिन मृदुला गर्ग की कहानियों ने मुझे विशेष प्रभावित किया । अब तक उनके अनेक कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । लेकिन सन् 1980 में प्रकाशित 'ग्लेशियर से' और सन् 1990 में प्रकाशित 'शहर के नाम' कहानीसंग्रहों ने मुझे विशेष प्रभावित किया। महानगरीय नारी जीवन से जुड़े इन कहानी-संग्रहों में नारी की अनगिनत समस्याओं की जड़ों तक पहुँचने का प्रयास किया है । अत: मैंने लघु-शोध प्रबंध के लिए प्रस्तुत कहानी-संग्रहो का ही चयन किया तथा आदरणीय गुरुवर्य डॉ. शंकर वसंत मुदगल जी के निर्देशन में ''मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी जीवन ('ग्लेशियर से','शहर के नाम' के विशेष संदर्भ में)'' शीर्षक निश्चित किया ।

प्रस्तुत विषय के अध्ययन के पूर्व मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए -

1. मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व किस प्रकार का होगा ?
2. उनके साहित्य को उनके व्यक्तित्व ने कहाँ तक प्रभावित किया है ?
3. कहानी के तत्वों में से वस्तु-तत्व का निर्वाह उनकी कहानियों में किस प्रकार हुआ है ?
4. नारी विमर्श का उनकी कहानियों में क्या स्थान है ?
5. प्रस्तुत कहानियों में चित्रित नारी पात्र किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं ?
6. प्रस्तुत कहानियों में नारी समस्याओं को कहाँ तक अभिव्यक्ति मिली है ?

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत विषय का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है ।

- **प्रथम अध्याय -**

'' कहानीकार मृदुला गर्ग और समकालीन कहानीकार ''

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अध्ययन के लिए उसके रचनाकार के जीवनवृत्त का परिचय आवश्यक होता है । अत: प्रस्तुत अध्याय में कहानीकार मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा समकालीन महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग के स्थान का विस्तृत विवेचन किया है । प्रस्तुत अध्याय को चार विभागों में विभाजित कर क्रमश: व्यक्तित्व, कृतित्व समकालीन महिला कहानीकारों के साहित्य का परिचय तथा समकालीन महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग का स्थान आदि का विवेचन किया है ।

- **द्‌वितीय अध्याय -**

'' मृदुला गर्ग की कहानियों में वस्तु-तत्व ''

प्रस्तुत अध्याय में मृदुला गर्ग की कहानियों का वस्तुगत अध्ययन प्रस्तुत किया है । कहानी के वस्तु-तत्व का संक्षेप में परिचय देते हुए वस्तु-तत्व के महत्त्व को प्रस्तुत किया है । अत: मृदुला गर्ग के विवेच्य कहानीसंग्रह की हर कहानी की संक्षिप्त कथावस्तु देते हुए उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । प्रस्तुत अध्याय का निष्कर्ष अंत में दिया है ।

- **तृतीय अध्याय -**

मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी पात्र

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित प्रमुख नारी पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला है । पात्र एवं चरित्र-चित्रण की दृष्टि से विवेच्य कहानियों का अध्ययन करते हुए इसके महत्त्व को प्रकट किया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं ।

- **चतुर्थ अध्याय -**

'' मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूप ''

प्रस्तुत अध्याय में हिंदी साहित्य में चित्रित नारी के विविध रूपों के बारे में संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करते हुए 'ग्लेशियर से' और 'शहर के नाम' कहानीसंग्रहों में चित्रित नारी के पारिवारिक, नायिकागत तथा व्यावसायिक रूपों का विस्तृत विवेचन किया है । अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है ।

- **पंचम् अध्याय -**

मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ

प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न युगीन नारी की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए 'ग्लेशियर से' और 'शहर के नाम' कहानीसंग्रहों में चित्रित विभिन्न नारी समस्याओं को उजागर किया है । अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है ।

- **उपसंहार -**

इस प्रकार पाँचों अध्यायों के विस्तृत विवेचन-विश्लेषण के बाद अंत में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, उन्हें उपसंहार के रूप में दिया है । साथ ही शोध कार्य के दौरान जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं उन्हें भी उपसंहार के बाद प्रस्तुत किया है । मृदुला गर्ग के कहानी साहित्य को लेकर अनुसंधान की नई दिशाएँ भी प्रस्तुत की हैं, जिससे आगे चलकर मृदुला गर्ग के कहानी साहित्य पर नए ढंग से अनुसंधान का कार्य हो सकता है ।

अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की है ।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ ।

प्रथमत: मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. शंकर वंसत मुदगल जी उपप्राचार्य, रीडर एवं विभागाध्यक्ष, कुरुंदवाड के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ । प्रस्तुत लघु शोध कार्य में मार्गदर्शक के रूप में आपका मार्गदर्शन मिलना मेरे लिए भाग्य की बात है क्योंकि जिंदगी के उतार-चढ़ाव में अनुसंधान कार्य को संपन्न करना मेरे लिए प्राय: असंभव-सा हुआ था । लेकिन आपकी प्रेरणा से प्रस्तुत लघु शोध कार्य को पूरा कर पाना संभव हो गया । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध आप ही के सुयोग्य मार्गदर्शन का फल है । आपके इस अनुग्रह से ऋणमुक्त होना मेरे लिए असंभव है । गुरुवर्य डॉ. शंकर मुदगल जी की धर्मपत्नी उषा भाभी जी का आशीर्वाद मेरे इस शोध कार्य को रसमय बनाता रहा । अत: मैं अपने गुरुवर्य के परिवार के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझती हूँ ।

साथ ही हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय डॉ. पांडुरंग पाटील जी, आदरणीय डॉ. वसंत मोरे जी, डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, डॉ. गिरीश काशिद आदि की भी मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन कर इस कार्य को पूरा करने में मेरी मदद की है ।

मैं अपने दोनों परिवारों के सुहृदयजनों के प्रति धन्यवाद प्रकट करना अपना कर्तव्य समझती हूँ । मेरे जीवन का कोई भी कार्य माता-पिता के बिना संपन्न नहीं हुआ है । अत: इस शोधकार्य के पूर्णत्व में मेरे पिताजी, माता एवं छोटे भाई युवराज एवं सुनील आदि का सहयोग प्रतिपल मिलता रहा । साथ ही ससुर श्री. मारुती पट्टणकुडे, सास मालू, ननद संगीता, देवर श्याम तथा देवरानी शितल आदि के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनके प्रोत्साहन से मैंन शोध कार्य का उद्दिष्ट प्राप्त करने में सफलता पाई है । मेरे पति श्री. राम जी ने मेरा धैर्य बंधाकर, प्रोत्साहन देकर शोध कार्य पूरा करने में सहयोग दिया । यह प्रबंध उनके आग्रह के कारण ही पूरा हो सका । उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर मैं औपचारिकता को निभाना नहीं चाहती । साथ ही उनके मित्र किशोर, सुधाकर, सुरेश, संजय, विरु आदि ने भी मुझे समय-समय पर आगे बढ़ने का प्रोत्साहन दिया । उनके प्रति मैं धन्यवाद प्रकट करती हूँ ।

प्रस्तुत शोधकार्य के दौरान मेरे मित्र परिवार ने भी मेरी बड़ी सहायता की है । जितेंद्र कोले, इन्नुस शेख, महादेवी, बेबी, रेज्जुला, अनघा, मनीषा, अस्मिता, वीणा, रेखा, गीतांजली, प्राजक्ता आदि का बड़ा योगदान रहा हैं । अत: इन सब के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

साथ ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर के प्रा. हिरेमठ, प्रा. एम्.पी.कोतवाल, प्रा. जी.ए.पाटील, प्रा. एल.एस.नाकाडी तथा अन्य सभी प्राध्यापक वर्ग का सहयोग मिलता रहा है । अत: उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए टंकक तथा हिंदी विभाग के कनिष्ठ लेखनिक अनिल साळोखे तथा अन्य कर्मचारियों का योगदान भी पर्याप्त रहा है । अत: इनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ । साथ ही बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय का पर्याप्त योगदान प्राप्त हुआ है । वहाँ के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

पुन: एक बार शोध-प्रबंध में मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देनेवालों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध विद्वजनों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ ।

शोध-छात्रा

(कु. शोभा नरसू जाधव)

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : दिसंबर, २००४

अनुक्रम

प्रथम अध्याय : '' कहानीकार मृदुला गर्ग और समकालीन महिला कहानीकार '' 1 to 36

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 बचपन

1.1.4 शिक्षा

1.1.5 पारिवारिक जीवन

1.1.6 वैवाहिक जीवन

1.1.7 पुरस्कार

1.1.8 प्रभाव

1.1.9 रचना - प्रक्रिया

1.2 कृतित्व

1.2.1 उपन्यास-साहित्य

1.2.1.1 वंशज

1.2.1.2 उसके हिस्से की धूप

1.2.1.3 चित्तकोबरा

1.2.1.4 अनित्य

1.2.1.5 मैं और मैं

1.2.1.6 कठगुलाब

1.2.2 कहानी-साहित्य

1.2.2.1 कितनी कैंदे

1.2.2.2 टुकड़ा-टुकड़ा आदमी

1.2.2.3 उर्फ सैम

1.2.2.4 डेफोड़िल जल रहे हैं

1.2.2.5 ग्लेशियर से

1.2.2.6 शहर के नाम

1.2.2.7 मेरे देश की मिट्टी : अहा !

1.2.3 अन्य साहित्य

1.3 समकालीन कहानी लेखिकाएँ और मृदुला गर्ग

1.3.1 शिवानी

1.3.2 कृष्णा सोबती

1.3.3 दीप्ति खंडेलवाल

1.3.4 उषा प्रियंवदा

1.3.5 मन्नू भंडारी

1.3.6 मालती जोशी

1.3.7 राजी सेठ

1.3.8 ममता कालिया

1.3.9 मेहरून्निसा परवेज

1.3.10 सूर्यबाला

1.3.11 चित्रा मुदगल

1.3.12 शशिप्रभा शास्त्री

1.3.13 सुधा अरोड़ा

1.3.14 निरूपमा सेवती

1.3.15 कृष्णा अग्निहोत्री

1.3.16 माणिका मोहिनी

1.3.17 सिम्मी हर्षिता

1.3.18 प्रतिमा वर्मा

1.3.19 मृणाल पांडे

1.4 समकालीन महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग का स्थान

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

द्वितीय अध्याय : '' मृदुला गर्ग की कहानियों में वस्तु-तत्व '' **37 to 68**

2.1 कहानियों में वस्तु-तत्व का महत्व

2.2 मृदुला गर्ग की कहानियों में वस्तु-तत्व

2.2.1 'ग्लेशियर से' कहानीसंग्रह

2.2.1.1 ग्लेशियर से

2.2.1.2 झूलती कुर्सी

2.2.1.3 टोपी

2.2.1.4 तुक

2.2.1.5 होना

2.2.1.6 उल्टी धारा

2.2.1.7 खरीदार

2.2.1.8 प्रतिध्वनि

2.2.1.9 संज्ञा

2.2.1.10 सार्त्र कहता है

2.2.1.11 अलग-अलग कमरे

2.2.1.12 खाली

2.2.1.13 अन्धकूप में चिराग

2.2.1.14 गूँगा कवि

2.2.1.15 अदृश्य

2.2.1.16 एक चीख का इंतजार

2.2.2 'शहर के नाम' कहानीसंग्रह

2.2.2.1 तीन किलो की छोरी

2.2.2.2 करार

2.2.2.3 अक्स

2.2.2.4 अनाड़ी

2.2.2.5 चकरघिन्नी

2.2.2.6 बाहरी जन

3.6.5 चैरी

3.6.6 'मैं' अर्थात कहानी की नायिका

3.6.7 सुवर्णा

3.6.8 लेखा

3.6.9 विनीता

3.6.10 नन्दिनी

3.6.11 सरिता

3.6.12 उमा

3.6.13 हेमवती

3.6.14 तारा

3.6.15 प्रिति

3.6.16 'मैं' अर्थात कहानी की नायिका

3.6.17 'मैं' अर्थात कहानी की नायिका

निष्कर्ष -

संदर्भ-सूची

चतुर्थ अध्याय '' मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूप '' 95 to 121

विषयप्रवेश

4.1 नारी के विविध रूप

4.1.1 पारिवारिक भूमिका के आधार पर नारी के रूप

4.1.1.1 माता -

विवश माँ

आर्थिक परिस्थिति के कारण बेबस माँ

बेटी के भविष्य के प्रति चिंतित माँ

असफल आदर्श माँ

बेटी के विवाह की चिंता करनेवाली माँ

मीरा

4.1.1.2 पत्नी -

असफल आदर्श पत्नी

पति के लिए त्याग करनेवाली

पतिद्वारा पीड़ित पत्नी

पति के पसंद के अनुरूप खुद को बदलनेवाली

पति के प्रेम से वंचित

आधुनिक विचारोंवाली

4.1.1.3 बेटी -

माँ की मदद करनेवाली

माँ के प्रति विद्रोह करनेवाली

पिता के इच्छा के खिलाफ विद्रोह करनेवाली

4.1.1.4 बहू-रूप -

विवश बहू

ससुर के खिलाफ विद्रोह करनेवाली

4.1.1.5 सास-रूप -

बहू का साथ देनेवाली

आदर्श सास

4.1.1.6 प्रेमिका के रूप में -

समर्पित प्रेमिका

स्वार्थी प्रेमिका

4.1.2 नायिका के रूप में -

प्रेमी की तलाश करती नायिका

पुरानी यादों में खोयी नायिका

ग्लेशियर की सैर करनेवाली

असफल प्रेम करनेवाली

4.1.3 विभिन्न व्यवसायों में नारी रूप -

4.1.3.1 सहायक कमिशनर

4.1.3.2 अनुसंधाता

4.1.3.3 नौकरानी

4.1.3.4 हार्ट स्पेशालिस्ट / डॉक्टर

4.1.3.5 लेक्चरर

4.1.3.6 चित्रकार

4.1.3.7 दाई

निष्कर्ष -

संदर्भ सूची

पंचम् अध्याय '' मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ '' 122 to 140

5.1 भूमिका

5.2 समस्याएँ

5.2.1 पारिवारिक विघटन की समस्या

5.2.2 कामकाजी नारी की समस्या

5.2.3 अशिक्षित तथा शिक्षित नारी की समस्या

5.2.4 घुटन और अकेलेपन की समस्या

5.2.5 प्रौढ़ अविवाहिता की समस्या

5.2.6 कन्याजन्म की समस्या

5.2.7 नि:संतान नारियों की समस्या

5.2.8 दहेज की समस्या

5.2.9 पतिद्वारा पीड़ित नारी की समस्या

5.2.10 आर्थिक समस्या

5.2.11 वैद्यकीय सुविधाओं के अभाव की समस्या

5.2.12 असफल प्रेम की समस्या

5.2.13 यौन शोषण की समस्या

5.2.14 अवैध यौन संबंध की समस्या

निष्कर्ष -

संदर्भ-सूची

उपसंहार 141 to 145

संदर्भ ग्रंथ सूची 146 to 151

प्रथम अध्याय

कहानीकार मृदुला गर्ग और समकालीन महिला कहानीकार

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 बचपन

1.1.4 शिक्षा

1.1.5 पारिवारिक जीवन

1.1.6 वैवाहिक जीवन

1.1.7 पुरस्कार

1.1.8 प्रभाव

1.1.9 रचना - प्रक्रिया

1.2 कृतित्व

1.2.1 उपन्यास-साहित्य

1.2.1.1 वंशज

1.2.1.2 उसके हिस्से की धूप

1.2.1.3 चित्तकोबरा

1.2.1.4 अनित्य

1.2.1.5 मैं और मैं

1.2.1.6 कठगुलाब

1.2.2 कहानी-साहित्य

1.2.2.1 कितनी कैदें

1.2.2.2 टुकड़ा-टुकड़ा आदमी

1.2.2.3 उर्फ सैम

1.2.2.4 डेफोड़िल जल रहे हैं

1.2.2.5 ग्लेशियर से

1.2.2.6 शहर के नाम

1.2.2.7 मेरे देश की मिट्टी : अहा !

1.2.3 अन्य साहित्य

1.3 समकालीन कहानी लेखिकाएँ और मृदुला गर्ग

1.3.1 शिवानी

1.3.2 कृष्णा सोबती

1.3.3 दीप्ति खंडेलवाल

1.3.4 उषा प्रियंवदा

1.3.5 मन्नू भंडारी

1.3.6 मालती जोशी

1.3.7 राजी सेठ

1.3.8 ममता कालिया

1.3.9 मेहरून्निसा परवेज

1.3.10 सूर्यबाला

1.3.11 चित्रा मुदगल

1.3.12 शशिप्रभा शास्त्री

1.3.13 सुधा अरोड़ा

1.3.14 निरूपमा सेवती

1.3.15 कृष्णा अग्निहोत्री

1.3.16 माणिका मोहिनी

1.3.17 सिम्मी हर्षिता

1.3.18 प्रतिमा वर्मा

1.3.19 मृणाल पांडे

1.4 समकालीन महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग का स्थान

निष्कर्ष